ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

बदलते दौर में लैंगिक पहचान: वैश्विक आधुनिकता के बीच प्रभा खेतान की कथा शैली का नारीवादी विश्लेषण

संदीप कौर, शोधकर्ता, हिंदी विभाग, एनआईआईएलएम विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)
डॉ. संदीप कुमार, सह - प्राध्यापक, हिंदी विभाग, एनआईआईएलएम विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)

सार

यह शोध प्रभा खेतान की आत्मकथात्मक और काल्पनिक रचनाओं के नज़रिए से जेंडर पहचान के बदलते स्वरूप को देखता है, और उन्हें एक वैश्विक आधुनिक संदर्भ में रखता है। एक नारीवादी आलोचनात्मक ढांचे के ज़रिए, यह उनकी कथा रणनीतियों का विश्लेषण करता है ताकि परंपरा, पितृसत्ता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आधुनिकता के बीच सूक्ष्म तनावों को उजागर किया जा सके। यह पेपर दिखाता है कि कैसे खेतान की कथा शैली प्रमुख लैंगिक मानदंडों को चुनौती देती है, एक वैकल्पिक महिला-केंद्रित विश्वदृष्टि का निर्माण करती है, और वैश्वीकरण के युग में पहचान के बदलते प्रतिमानों को दर्शाती है।

विशेष शब्द : आत्मकथात्मक, पितृसत्ता, लैंगिक मानदंड, स्वतंत्रता

1. परिचय

समकालीन वैश्वीकरण, तीव्र शहरीकरण, बाजारवादी संस्कृति और बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के वर्तमान दौर में लैंगिक पहचान की अवधारणा गहरे संक्रमण से गुजर रही है। पारंपरिक पितृसत्तात्मक संरचनाएँ जहाँ स्त्री की पहचान को परिवार, विवाह और सामाजिक मर्यादा तक सीमित करती थीं, वहीं आधुनिकता और वैश्वीकरण ने स्त्री को शिक्षा, रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता के नए अवसर प्रदान किए हैं। तथापि, विभिन्न सामाजिक रिपोर्टों और अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि यह परिवर्तन पूर्ण मुक्ति नहीं, बल्कि एक जटिल द्वंद्व का रूप लेता है। उदाहरणतः राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) और सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षणों में यह तथ्य सामने आया है कि शहरी और शिक्षित स्त्रियों में आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ी है, परंतु सामाजिक स्वीकार्यता, सम्मान और निर्णय-स्वतंत्रता में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ है। इस संदर्भ में स्त्री की पहचान आज भी परंपरा और आधुनिकता के बीच झूलती हुई दिखाई देती है। इसी संक्रमणकालीन सामाजिक परिदृश्य में प्रभा खेतान एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण लेखिका के रूप में उभरती हैं। वे केवल साहित्यकार ही नहीं, बल्कि एक उद्यमी, चिंतक और मुखर नारीवादी भी थीं। उनकी आत्मकथा अन्या से अन्यया आधुनिक भारतीय स्त्री की मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक जटिलताओं को अत्यंत साहसिक और आत्मविश्लेषणात्मक शैली में प्रस्तुत करती है। यह कृति उस स्त्री की कथा है जो आर्थिक रूप से सफल और बौद्धिक रूप से सजग होने के बावजूद सामाजिक स्वीकृति, प्रेम, नैतिकता और सम्मान के प्रश्नों से निरंतर जूझती रहती है। प्रभा खेतान का लेखन यह उजागर करता है कि आधुनिकता के बावजूद स्त्री की अस्मिता आज भी सामाजिक पूर्वाग्रहों, नैतिक दोहरे मानदंडों और पितृसत्तात्मक नियंत्रण से मुक्त नहीं हो पाई है।

यह अध्ययन अन्या से अन्यया को केवल एक आत्मकथा के रूप में नहीं, बल्कि लैंगिक पहचान के निर्माण और पुनर्निर्माण के पाठ के रूप में देखता है। प्रभा खेतान की कथा-शैली में स्मृति, आत्मचिंतन, भाषा और आत्मस्वीकृति केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। वे निजी अनुभवों को सार्वजनिक विमर्श में बदलते हुए यह दिखाती हैं कि स्त्री का "मैं" केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक भी होता है। उनका आत्मकथात्मक "स्व" आधुनिक भारतीय समाज में स्त्री के अस्तित्व, उसकी इच्छाओं, अपराधबोध, पीड़ा और प्रतिरोध को उजागर करता है। यहाँ आत्मकथा एक साहित्यिक विधा न रहकर नारीवादी हस्तक्षेप का रूप ले लेती है।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि प्रभा खेतान किस प्रकार कथा-रूप, भाषा-चयन, स्मृति-लेखन और आत्ममंथन के माध्यम से उत्तर-औपनिवेशिक, वैश्वीकृत भारत में स्त्री पहचान की जटिलताओं को अभिव्यक्त करती हैं। यह शोध यह भी दर्शाता है कि वैश्वीकरण जहाँ स्त्री को अवसर देता है, वहीं सामाजिक नैतिकता और पितृसत्ता उसे निरंतर सीमित भी करती है। इस प्रकार अन्या से अन्यया आधुनिक भारतीय स्त्री के संघर्ष, आत्मनिर्माण और अस्मिता की खोज का एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज़ बन जाती है, जो समकालीन नारीवादी विमर्श में एक सशक्त और प्रासंगिक हस्तक्षेप प्रस्तुत करती है।

2. साहित्य की समीक्षा

अंकिता विश्वकर्मा (2024) अंकिता विश्वकर्मा ने प्रभा खेतान की आत्मकथा अन्या से अन्यया को स्त्री पहचान के निर्माण की प्रक्रिया के रूप में पढ़ा है। उनके अनुसार प्रभा खेतान का जीवन-वृत्त एक ऐसे समाज को उजागर करता है जहाँ स्त्री की पहचान पारिवारिक मर्यादाओं, नैतिकता और पितृसत्ता द्वारा नियंत्रित होती है। लेखिका बताती हैं कि आधुनिकता और वैश्वीकरण स्त्री को आर्थिक स्वतंत्रता तो देते हैं, लेकिन सामाजिक स्वीकृति नहीं। निष्कर्षतः यह आत्मकथा केवल व्यक्तिगत कथा नहीं बल्कि स्त्री के संघर्ष और आत्मनिर्माण का सामाजिक दस्तावेज़ है। आलोचनात्मक सिद्धांत: उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद और वैश्वीकरण

अध्ययन।

वीणा जोशी एवं भावना चितलंगिया (2024) इन लेखिकाओं ने अमृता प्रीतम और प्रभा खेतान की आत्मकथाओं की तुलना करते हुए कहा है कि दोनों लेखिकाएँ प्रेम, पीड़ा और पहचान को सामाजिक आलोचना में बदल देती हैं। प्रभा खेतान का आत्मकथात्मक "मैं" केवल निजी नहीं रहता, बल्कि सामूहिक स्त्री अनुभव का प्रतिनिधि बन जाता है। निष्कर्ष यह है कि स्त्री आत्मकथा सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनती है। आलोचनात्मक सिद्धांत: नारीवादी आत्मकथा सिद्धांत और कथा-एजेंसी।

स्वाति सिंह (2023) स्वाति सिंह ने प्रभा खेतान की आत्मकथा को सामाजिक कलंक और सम्मान की राजनीति के संदर्भ में पढ़ा है। वे बताती हैं कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद स्त्री को समाज में सम्मान नहीं मिलता। प्रभा खेतान का लेखन इन सूक्ष्म अपमानों और सामाजिक बहिष्कार को दर्ज करता है। निष्कर्षतः यह लेखन स्त्री की चुप्पी के विरुद्ध प्रतिरोध है। आलोचनात्मक सिद्धांत: सम्मान राजनीति और सार्वजनिक-निजी स्त्री विमर्श।

रीना सिंह एवं डॉ. राघवेंद्र तिवारी (2022) इन विद्वानों ने प्रभा खेतान की आत्मकथा को स्त्री की सामाजिक स्थिति और नैतिक दोगलेपन के संदर्भ में पढ़ा है। वे बताते हैं कि समाज पुरुष की स्वतंत्रता को सहज मानता है, लेकिन स्त्री के प्रेम और निर्णयों को संदेह की दृष्टि से देखता है। प्रभा खेतान का लेखन इस असमानता को उजागर करता है। निष्कर्षतः आत्मकथा स्त्री की अस्मिता और आत्मसम्मान की लड़ाई का दस्तावेज़ बन जाती है। आलोचनात्मक सिद्धांत: अंतर्विभागीय नारीवाद।

उपासना (2020) उपासना ने प्रभा खेतान के लेखन को नारीवादी, अस्तित्ववादी और मार्क्सवादी दृष्टिकोण से विश्लेषित किया है। वे मानती हैं कि प्रभा खेतान की रचनाओं में स्त्री की पहचान सामाजिक दबावों और आत्मचेतना के द्वंद्व से बनती है। आत्मकथा में स्त्री "स्व" को खोजते हुए सामाजिक नियमों को चुनौती देती है। निष्कर्ष यह है कि प्रभा खेतान का आत्मकथात्मक लेखन स्त्री को वस्तु नहीं, बल्कि सक्रिय और सोचने वाली इकाई के रूप में स्थापित करता है। आलोचनात्मक सिद्धांत: नारीवादी अस्तित्ववाद और मार्क्सवादी नारीवाद।

प्रीति दुबे (2019) प्रीति दुबे ने अपनी पीएच.डी. में प्रभा खेतान को हिंदी स्त्री आत्मकथाओं की परंपरा में रखा है। वे मानती हैं कि स्त्री आत्मकथा निजी जीवन को सार्वजनिक विमर्श में बदल देती है। प्रभा खेतान का लेखन यह दिखाता है कि स्त्री की पहचान परिवार, समाज और आत्मसंघर्ष के बीच कैसे बनती है। निष्कर्ष यह है कि स्त्री आत्मकथा सत्ता-विरोधी ज्ञान का रूप ले लेती है। आलोचनात्मक सिद्धांत: आत्मकथात्मक सिद्धांत और नारीवादी दृष्टिकोण सिद्धांत।

योजणा रावत (2018) योजणा रावत ने अन्या से अन्यया को पितृसत्ता से पीड़ित स्त्री की करुण कथा के रूप में देखा है। उनके अनुसार प्रभा खेतान का लेखन स्त्री के मौन को तोड़ता है और सामाजिक अत्याचार को उजागर करता है। लेखन में पीड़ा, अपमान और संघर्ष को बिना संकोच प्रस्तुत किया गया है। निष्कर्षतः यह आत्मकथा स्त्री की साक्षी-वाणी बन जाती है। आलोचनात्मक सिद्धांत: पितृसत्तात्मक आलोचना और नारीवादी पीड़ा-सिद्धांत।

डॉ. प्रीति सागर (2015) डॉ. प्रीति सागर के अनुसार प्रभा खेतान की आत्मकथा हिंदी साहित्य में स्त्री आत्मस्वीकार का साहसी उदाहरण है। यह लेखन स्त्री की इच्छा, प्रेम और आत्मनिर्णय को नैतिक सीमाओं से बाहर लाकर प्रस्तुत करता है। निष्कर्ष यह है कि प्रभा खेतान की कथा आधुनिक स्त्री की पहचान और आत्मसम्मान की वैचारिक घोषणा है। आलोचनात्मक सिद्धांत: नारीवादी स्वीकारोक्ति सिद्धांत और उत्तर-औपनिवेशिक आधुनिकता।

2. अध्ययन के उद्देश्य

1. खैतान की रचनाओं में जेंडर पहचान के प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करना।
2. उनकी कथा शैली में इस्तेमाल की गई नारीवादी रणनीतियों की पहचान करना।
3. उनके लेखन को वैश्विक आधुनिकता के ढांचे में संदर्भ देना।
4. उनकी कहानियों में जेंडर, वर्ग और सामाजिक गतिशीलता के अंतर्संबंध का पता लगाना।

3. अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक पाठ्य विश्लेषण पर आधारित है, जिसमें नारीवादी साहित्यिक सिद्धांत को मुख्य सैद्धांतिक आधार बनाया गया है। इस पद्धति के माध्यम से पाठ की भाषा, कथ्य, आत्मकथात्मक स्वर और वैचारिक संरचनाओं का गहन अध्ययन किया गया है, ताकि स्त्री अनुभव, पहचान और आत्मस्वर की अभिव्यक्ति को समझा जा सके। अध्ययन में किसी भी प्रकार के सांख्यिकीय विश्लेषण के स्थान पर अर्थ और अनुभव की व्याख्या पर विशेष बल दिया गया है।

इस शोध का सैद्धांतिक ढाँचा उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद पर आधारित है, जिसमें चंद्रा तलपाड़े मोहंती और गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक के विचारों का उपयोग किया गया है। मोहंती की तृतीय विश्व की स्त्री के एकरूपीकरण की आलोचना तथा स्पिवाक की

'सबऑल्टर्न' और 'वाणी' की अवधारणाएँ खैतान की स्वीकारोक्तिपूर्ण लेखन शैली को पितृसत्तात्मक विमर्श के विरुद्ध एक सशक्त हस्तक्षेप के रूप में समझने में सहायक होती हैं।

अध्ययन में इंटरसेक्शनैलिटी सिद्धांत (किम्बरले क्रेंशॉ) के माध्यम से यह विश्लेषण किया गया है कि लिंग, वर्ग, शिक्षा और सामाजिक स्थिति जैसे कारक स्त्री अनुभवों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। साथ ही, आत्मकथात्मक सिद्धांत, विशेष रूप से फिलिप लेज्यून की 'आत्मकथात्मक संधि', का प्रयोग कर खैतान के लेखन की प्रामाणिकता और नारीवादी चेतना को रेखांकित किया गया है। इसके अतिरिक्त, आधुनिकता और वैश्वीकरण अध्ययन के अंतर्गत अर्जुन अप्पादुराई और एंथनी गिडेंस के विचारों का संदर्भ लिया गया है, जिससे खैतान के लेखन में परंपरा–आधुनिकता के द्वंद्व और आधुनिक स्त्री पहचान को समझा जा सके। अध्ययन के प्राथमिक स्रोत के रूप में अन्या से अनन्या तथा चयनित निबंधों का उपयोग किया गया है, जबकि द्वितीयक स्रोतों में नारीवादी आलोचनाएँ और संबंधित शोध साहित्य सम्मिलित हैं।

4. प्रभा खेतान: जीवनी और संदर्भ

प्रभा खेतान (1942–2008) एक ऐसे ऐतिहासिक दौर में एक बेहद प्रभावशाली साहित्यिक हस्ती, उद्यमी और नारीवादी विचारक के रूप में उभरीं, जब भारतीय महिलाओं से—खासकर रूढ़िवादी कारोबारी समुदायों की महिलाओं से—घर की चारदीवारी तक सीमित रहने की उम्मीद की जाती थी। कोलकाता के एक अमीर मारवाड़ी परिवार में जन्मीं खेतान एक ऐसे सामाजिक माहौल में पली-बढ़ीं, जहाँ सख्त पितृसत्ता, कड़े नैतिक नियम और लिंग के आधार पर साफ तौर पर बंटे हुए काम थे। उच्च वर्ग और पढ़े-लिखे परिवार से होने के बावजूद, उनका जीवन गहरी विरोधाभासों से भरा था: जहाँ शिक्षा और सुविधा ने उन्हें बौद्धिक और आर्थिक संसाधनों तक पहुँच दी, वहीं पितृसत्तात्मक नियमों ने साथ ही उनकी भावनात्मक आज़ादी, सामाजिक पहचान और निजी फैसलों को भी सीमित कर दिया। सुविधा और पाबंदियों के बीच यह तनाव उनके जीवन और लेखन का मुख्य संदर्भ है, जो उनकी जीवनी को यह समझने के लिए एक महत्वपूर्ण ज़मीन बनाता है कि कैसे स्थापित सामाजिक ढाँचों के भीतर लैंगिक पहचान को आकार दिया जाता है।

खेतान भारतीय महिला उद्यमियों की पहली पीढ़ी में से थीं, जिन्होंने ऐसे समय में बड़े व्यावसायिक उद्यमों की स्थापना की और उनका नेतृत्व किया, जब कॉर्पोरेट और औद्योगिक क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी दुर्लभ थी और अक्सर इसका विरोध किया जाता था। पुरुष-प्रधान व्यापार जगत में उनकी सफलता ने स्त्रीत्व की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दी, फिर भी यह उन्हें सामाजिक कलंक या नैतिक जाँच से नहीं बचा पाई—खासकर उनके निजी रिश्तों के मामले में। यह विरोधाभास उनके जीवन की एक मुख्य बात को रेखांकित करता है: आर्थिक सशक्तिकरण अपने आप महिलाओं के लिए सामाजिक स्वीकृति में नहीं बदलता। अपने व्यावसायिक करियर के साथ-साथ, खेतान महिलाओं के अधिकारों पर चर्चा, नारीवादी बहसों और बौद्धिक हलकों में सक्रिय रूप से शामिल थीं, और खुद को महिलाओं की मुक्ति के एक प्रैक्टिशनर और सिद्धांतकार दोनों के रूप में स्थापित किया। उनका साहित्यिक काम, खासकर आत्मकथात्मक 'अन्य से अनन्या', बहुत ही ईमानदार, आत्म-विश्लेषणात्मक और बेझिझक नारीवादी है। अपने जीवन के अनुभवों से सीधे प्रेरणा लेते हुए, खेतान ने प्यार, इच्छा, अपराधबोध, अकेलापन, महत्वाकांक्षा और सामाजिक बहिष्कार जैसे विषयों को सामने रखा—ऐसे विषय जिन्हें पारंपरिक रूप से महिलाओं के लेखन में चुप करा दिया जाता था या उन पर नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाता था। उनकी कथा शैली आदर्शवाद का विरोध करती है; इसके बजाय, यह एक आलोचनात्मक समाज में एक स्वतंत्र महिला के रूप में जीने की भावनात्मक कीमत को उजागर करती है। इस अर्थ में, उनका लेखन औपनिवेशिक और आधुनिक भारत में व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक बदलावों का दर्पण है, जहाँ महिलाएँ सार्वजनिक, आर्थिक और बौद्धिक क्षेत्रों में प्रवेश कर रही थीं, लेकिन नैतिकता और पहचान पर पितृसत्तात्मक नियंत्रण का सामना करना जारी रखा। इस प्रकार, प्रभा खेतान का जीवन और कार्य मिलकर भारतीय नारीवादी इतिहास में एक महत्वपूर्ण बदलाव के क्षण का प्रतिनिधित्व करते हैं—एक ऐसा क्षण जहाँ व्यक्तिगत परिवर्तन संरचनात्मक आलोचना से अविभाज्य हो जाता है, और आत्मकथा नारीवादी प्रतिरोध का एक शक्तिशाली माध्यम बन जाती है।

5. संक्रमण में लिंग पहचान

'अन्या से अनन्या' में, प्रभा खेतान लैंगिक पहचान को एक स्थिर या निश्चित पहचान के रूप में नहीं, बल्कि एक तरल, विकसित होती आत्मकथात्मक विषय के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो भावनात्मक संघर्ष, बौद्धिक जागृति और नारीवादी चेतना से आकार लेती है। उनकी आत्मकथात्मक पहचान अधीनता से मुखरता की ओर एक स्पष्ट परिवर्तन से गुज़रती है, जो एक ऐसी महिला को दर्शाती है जिसे शुरू में पितृसत्तात्मक अपेक्षाओं - आज्ञाकारिता, भावनात्मक संयम और आंतरिक अपराधबोध - के तहत सामाजिक बनाया गया था, जो धीरे-धीरे आत्म-चिंतन और लेखन के माध्यम से अपनी एजेंसी वापस पाती है। खेतान की शुरुआती कथात्मक आवाज़ में झिझक, आत्म-संदेह और सामाजिक रूप से स्वीकृत स्त्रीत्व के अनुरूप होने का दबाव दिखता है, खासकर पुरुष सत्ता वाले

पारिवारिक और रोमांटिक रिश्तों में। हालाँकि, जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, यह अधीनता वाला रवैया एक अधिक मुखर नारीवादी पहचान में बदल जाता है जो खुले तौर पर पितृसत्तात्मक मानदंडों, भावनात्मक निर्भरता और महिलाओं की इच्छाओं को दबाने पर सवाल उठाती है। यह बदलाव अचानक नहीं, बल्कि दर्दनाक रूप से धीरे-धीरे होता है, जो इस बात पर ज़ोर देता है कि नारीवादी आत्मनिष्ठा वैचारिक निश्चितता के बजाय जीवन में अनुभव किए गए विरोधाभासों से बनती है। लेखन स्वयं प्रतिरोध का एक कार्य बन जाता है - स्वीकारोक्ति, आलोचना और आत्म-नामकरण के माध्यम से - जिससे खेतान एक ऐसी महिला के रूप में अपनी स्थिति पर फिर से बातचीत कर पाती हैं जो पुरुष-केंद्रित कहानियों में "दूसरा" बनकर रहने से इनकार करती है।

इस विकसित होती पहचान की एक प्रमुख विशेषता खेतान का अकेलेपन के साथ निरंतर जुड़ाव है, जो भावनात्मक बोझ और परिवर्तनकारी स्थान दोनों के रूप में है। 'अन्या से अनन्या' बार-बार अकेलेपन को सामने लाती है - न केवल दूसरों द्वारा छोड़े जाने के रूप में, बल्कि असमान रिश्तों में महिलाओं के भावनात्मक श्रम से उत्पन्न स्थिति के रूप में। खेतान का अकेलापन बिना प्रतिफल वाले प्यार, सामाजिक अलगाव और भावनात्मक पहचान की कमी से उत्पन्न होता है, खासकर पितृसत्तात्मक रोमांटिक संरचनाओं में जहाँ महिलाओं से बिना किसी स्वायत्तता के लगातार देने की उम्मीद की जाती है। फिर भी, यह अकेलापन धीरे-धीरे मुक्ति का स्थान बन जाता है, जो आत्मनिरीक्षण और आत्म-साक्षात्कार को सक्षम बनाता है। अलगाव से स्वायत्तता की ओर यह यात्रा एक महत्वपूर्ण नारीवादी बदलाव को चिह्नित करती है: अकेलापन विफलता या कमी का संकेत देना बंद कर देता है और इसके बजाय आत्म-पहचान के लिए एक पूर्व शर्त बन जाता है। सामाजिक रूप से स्वीकृत निर्भरता पर भावनात्मक स्वतंत्रता को चुनकर, खेतान अकेलेपन को एक नैतिक और राजनीतिक रुख के रूप में फिर से परिभाषित करती हैं, यह दावा करते हुए कि एक महिला की संतुष्टि शादी, पुरुष की स्वीकृति, या सामाजिक अनुमोदन पर आधारित नहीं होनी चाहिए।

इसी तरह, खेतान का शरीर की राजनीति के साथ जुड़ाव भी उतना ही क्रांतिकारी है, जिसके माध्यम से वह महिला कामुकता, इच्छा और शारीरिक एजेंसी से जुड़े साहित्यिक और सांस्कृतिक वर्जनाओं को तोड़ती हैं। पारंपरिक हिंदी आत्मकथात्मक कहानियों के विपरीत जो अक्सर महिलाओं के अनुभवों को साफ-सुथरा दिखाती हैं, खेतान बिना किसी माफी के रोमांटिक उलझनों, कामुक लालसा, भावनात्मक भेद्यता और इच्छा की जटिलताओं के बारे में लिखती हैं। उसके शरीर को पुरुष की नज़र से आकार दी गई एक पैसिव चीज़ के रूप में नहीं, बल्कि एक सोचने, महसूस करने और चाहने वाले सब्जेक्ट के रूप में दिखाया गया है। नैतिकता की माफी मांगे बिना, एक महिला के नज़रिए से सेक्शुअलिटी को बयान करके, खैतान पवित्रता और उल्लंघन की पितृसत्तात्मक बाइनरी को चुनौती देती हैं जो महिलाओं के शरीर को कंट्रोल करती हैं। शरीर की इस एजेंसी का यह ज़िक्र उनकी लेखन को शरीर को एक राजनीतिक जगह के रूप में नारीवादी दावों से जोड़ता है, जहाँ प्यार, दर्द और खुशी के पर्सनल अनुभव सांस्कृतिक चुप्पी के खिलाफ विरोध के काम बन जाते हैं। इस तरह, अन्या से अनन्या आत्मकथात्मक स्व को एक नारीवादी हस्तक्षेप में बदल देती है, यह ज़ोर देते हुए कि जेंडर पहचान विरासत में नहीं मिलती बल्कि पितृसत्ता की संरचनाओं के अंदर और खिलाफ संघर्ष, भाषण और आत्म-अधिकार के माध्यम से लगातार बनाई जाती है।

6. कथा शैली नारीवादी प्रतिरोध के रूप में

प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' में कहानी कहने का तरीका नारीवादी प्रतिरोध के एक रूप में काम करता है, न केवल जो बताया गया है, बल्कि जिस तरह से कहानी को गढ़ा और आवाज़ दी गई है, उसके ज़रिए भी। उनका लेखन रैखिकता, सुसंगति और समापन का विरोध करता है - ये गुण पारंपरिक रूप से मर्दाना, तर्कसंगत और आधिकारिक बातचीत से जुड़े हैं - और इसके बजाय एक चिंतनशील लेकिन विघटनकारी तरीका अपनाता है जो महिलाओं के जीवन की टूटी-फूटी वास्तविकताओं को दिखाता है। आत्मनिरीक्षण, भाषाई संकरता, प्रतीकात्मक कल्पना और रणनीतिक चुप्पी के माध्यम से, खेतान एक ऐसी कथात्मक जगह बनाती हैं जहाँ महिला की आत्मनिष्ठा अपनी शर्तों पर उभर सकती है, जो प्रमुख साहित्यिक परंपराओं और पितृसत्तात्मक अपेक्षाओं को चुनौती देती है।

इस प्रतिरोध का एक मुख्य तत्व खेतान का चेतना की धारा और गहन आत्मनिरीक्षण का उपयोग है, जो पाठकों को सामाजिक मानदंडों, भावनात्मक निर्भरता और आत्म-पहचान से जूझ रही एक महिला की आंतरिक मनोवैज्ञानिक दुनिया तक पहुँचने की अनुमति देता है। घटनाओं को एक व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत करने के बजाय, खेतान विचारों, यादों, भावनात्मक उतार-चढ़ाव और अनसुलझे संघर्षों को सामने लाती हैं। यह अंदर की ओर मुड़ने वाली कहानी आत्मकथा के बाहरी, कार्रवाई-संचालित मॉडलों को बाधित करती है और महिला की आंतरिकता को केंद्र में लाती है, जिसे ऐतिहासिक रूप से हिंदी साहित्य में हाशिए पर रखा गया है। चेतना की धारा की तकनीक एक नारीवादी उपकरण बन जाती है क्योंकि यह भ्रम, भेद्यता और भावनात्मक अतिरेक को मान्य करती है - ऐसी स्थितियाँ जिन्हें अक्सर महिलाओं में कमजोरी के रूप में खारिज कर दिया जाता है। कार्रवाई पर विचार और समाधान पर

भावना को प्राथमिकता देकर, खेतान यह दावा करती हैं कि एक महिला का आंतरिक जीवन स्वयं अर्थ, संघर्ष और बौद्धिक पूछताछ का एक वैध स्थान है।

हिंदी और अंग्रेजी के बीच खेतान का कोड-स्विचिंग परंपरा और वैश्विक आधुनिकता के बीच उनके तालमेल को दर्शाकर इस नारीवादी हस्तक्षेप को और गहरा करता है। हिंदी, जो सांस्कृतिक जड़ों, भावनात्मक स्मृति और सामाजिक मानदंडों से जुड़ी है, अक्सर विरासत में मिली पितृसत्ता का बोझ उठाती है, जबकि अंग्रेजी बौद्धिक दूरी, आधुनिक शिक्षा और वैश्विक नारीवादी विमर्श की भाषा के रूप में काम करती है। इन भाषाओं के बीच बदलाव शैलीगत अलंकरण नहीं है, बल्कि एक कथात्मक रणनीति है जो स्वदेशी परंपराओं और अंतर्राष्ट्रीय विचारों दोनों से आकार लेने वाली एक आधुनिक भारतीय महिला की विभाजित चेतना को प्रकट करती है। यह भाषाई संकरता एक एकल, "शुद्ध" सांस्कृतिक पहचान की अपेक्षा का विरोध करती है और इसके बजाय बहुल जुड़ाव को अपनाती है। ऐसा करके, खेतान राष्ट्रवादी और पितृसत्तात्मक आदर्शों को चुनौती देती हैं जो महिलाओं को सांस्कृतिक रूप से निश्चित भूमिकाओं में सीमित करने की कोशिश करते हैं, यह दावा करते हुए कि महिला पहचान संकर, गतिशील और ऐतिहासिक रूप से स्थित है।

एक और शक्तिशाली शैलीगत विशेषता दर्पण और मुखौटों के रूपक का खेतान का बार-बार उपयोग है, जो प्रतीकात्मक रूप से स्वयं की बहुलता और विखंडन का प्रतिनिधित्व करता है। आईने दिखाते हैं कि औरतें खुद को कैसे देखती हैं और दूसरे उन्हें कैसे देखते हैं, जबकि मास्क उन दिखावटी भूमिकाओं को दिखाते हैं जो औरतें पितृसत्तात्मक ढांचों में ज़िंदा रहने के लिए अपनाती हैं—बेटी, प्रेमिका, बुद्धिजीवी, देखभाल करने वाली। ये रूपक असलियत और दिखावे के बीच के तनाव को उजागर करते हैं, यह दिखाते हुए कि औरतों को अक्सर समाज की अलग-अलग उम्मीदों को पूरा करने के लिए अपनी पहचान को टुकड़ों में बांटना पड़ता है। इन तस्वीरों को बार-बार इस्तेमाल करके, खैतान इस तरह के बंटवारे की मनोवैज्ञानिक कीमत को सामने लाती हैं, साथ ही थोपी गई भूमिकाओं से परे खुद को पहचानने की संभावना भी बताती हैं। खासकर, आईना टकराव की जगह बन जाता है जहाँ कहानी सुनाने वाली यह सवाल करती है कि उसकी पहचान किसकी नज़र से तय होती है—समाज की या उसकी अपनी—इस तरह आत्म-चिंतन को विरोध का एक काम बना देती है।

इसी तरह खैतान का चुप्पी, ठहराव और अनकही यादों का रणनीतिक इस्तेमाल भी बहुत महत्वपूर्ण है, जो एक सूक्ष्म लेकिन शक्तिशाली कहानी कहने की तकनीक के रूप में काम करता है। 'अन्या से अनन्या' में चुप्पी अक्सर सदमे, भावनाओं को दबाने, या ऐसे अनुभवों का संकेत देती है जिन्हें आसानी से शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता—जैसे नुकसान, भावनात्मक अकेलापन, या दबी हुई इच्छा। इन खाली जगहों को समझाने वाली टिप्पणियों से भरने के बजाय, खैतान खुद अनुपस्थिति को बोलने देती हैं, जो औरतों के दर्द को दिखाने में भाषा की सीमाओं को स्वीकार करती है। कुछ अनुभवों को पूरी तरह से शब्दों में बयां करने से यह इनकार, कबूलनामे, सफाई, या नैतिक स्पष्टता के लिए पितृसत्तात्मक मांगों को चुनौती देता है। इस तरह चुप्पी एक राजनीतिक इशारा बन जाती है, जो अनकही बातों पर नियंत्रण बनाए रखती है और कहानी पर कब्ज़े का विरोध करती है। नारीवादी शब्दों में, ये ठहराव कहानी कहने के प्रमुख तरीकों को बाधित करते हैं और यह पुष्टि करते हैं कि औरतों का विरोध न केवल बोलने में बल्कि जानबूझकर चुप रहने में भी मौजूद हो सकता है।

7. वैश्विक आधुनिकता और महिला आत्मनिष्ठा

प्रभा खेतान की 'अन्य से अनन्या' में, वैश्विक आधुनिकता एक मिली-जुली शक्ति के रूप में उभरती है जो एक साथ महिलाओं की आज़ादी को संभव बनाती है और भावनात्मक और सांस्कृतिक अलगाव को बढ़ाती है। खेतान आधुनिकता को प्रगति की एक सीधी कहानी के रूप में पेश नहीं करतीं; इसके बजाय, वह महिला आत्मनिष्ठा पर इसके विरोधाभासी प्रभावों को उजागर करती हैं, जहाँ आज़ादी के साथ अलगाव के नए रूप भी आते हैं। उनका आत्मकथात्मक व्यक्तित्व नवउदारवादी पूंजीवाद, शहरी आधुनिकता और लगातार पितृसत्तात्मक संरचनाओं के आपस में जुड़े ढाँचों के भीतर आकार लेता है, जो यह दिखाता है कि आधुनिक भारतीय महिलाएँ बिना पूरी भावनात्मक या सांस्कृतिक मुक्ति के आज़ादी के साथ कैसे तालमेल बिठाती हैं।

आधुनिकता के साथ खेतान के जुड़ाव का सबसे खास पहलू उपभोक्ता संस्कृति और महिला एजेंसी के प्रति उनका नज़रिया है, खासकर उनकी उद्यमी पहचान के ज़रिए। पुरुष-प्रधान आर्थिक क्षेत्र में काम करने वाली एक सफल व्यवसायी के तौर पर, खेतान नवउदारवादी भारत में आर्थिक कर्ता के रूप में महिलाओं के उभरने का प्रतीक हैं। वित्तीय स्वतंत्रता आत्म-सम्मान और स्वायत्तता का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन जाती है, जिससे वह शादी और पारिवारिक स्वीकृति पर पारंपरिक निर्भरता का विरोध कर पाती हैं। हालाँकि, खेतान इस बात से अच्छी तरह वाकिफ हैं कि सिर्फ़ आर्थिक सशक्तिकरण से पितृसत्तात्मक शक्ति खत्म नहीं होती। उपभोक्ता संस्कृति दृश्यता, गतिशीलता और पसंद की आज़ादी देती है, फिर भी यह महिलाओं की सफलता को उत्पादकता और बाज़ार मूल्य तक सीमित करने का जोखिम भी पैदा करती है। अपने उद्यमी जीवन को भावनात्मक कमज़ोरी के साथ-साथ बयान करके, खेतान

नवउदारवादी नारीवाद की जश्न मनाने वाली कहानियों का विरोध करती हैं और इसके बजाय एजेंसी को कड़ी मेहनत से हासिल, आंशिक और भावनात्मक रूप से जटिल के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो सशक्तिकरण और थकावट दोनों से आकार लेती है।

खैतान की कहानी ग्लोबल अनुभव और सांस्कृतिक जड़ों के बीच के तनाव को भी दिखाती है, क्योंकि वह आधुनिक शहरी जगहों से गुज़रती है, लेकिन साथ ही गहरी सामाजिक उम्मीदों से भी बंधी रहती है। ग्लोबल विचारों—नारीवादी सोच, आधुनिक शिक्षा, और कॉस्मोपॉलिटन जीवनशैली—के प्रति उनका अनुभव पारंपरिक लिंग भूमिकाओं से एक आलोचनात्मक दूरी बनाता है, जिससे वह शादी, यौन संबंध और महिलाओं की आज्ञाकारिता से जुड़े नियमों पर सवाल उठा पाती हैं। फिर भी, यह ग्लोबल सोच सांस्कृतिक यादों को मिटाती नहीं है; बल्कि, यह टकराव को और बढ़ाती है। परंपरा का खिंचाव—पारिवारिक सम्मान, भावनात्मक कर्तव्य, और सामाजिक निगरानी—उनके अंदरूनी जीवन को आकार देता रहता है, जिससे समाधान के बजाय लगातार मोलभाव की भावना पैदा होती है। यह उतार-चढ़ाव उत्तर-औपनिवेशिक आधुनिकता की जीती-जागती सच्चाई को दिखाता है, जहाँ महिलाएं एक ही समय में कई समयों में जीती हैं, विरासत में मिली सांस्कृतिक कहानियों को आधुनिक शहरी संदर्भों में ले जाती हैं जो आज़ादी का वादा करते हैं लेकिन शायद ही कभी भावनात्मक सुरक्षा देते हैं।

इस मोलभाव के केंद्र में खैतान की एक साथ कई भूमिकाओं में रहने की क्षमता है—एक लेखिका, उद्यमी, बुद्धिजीवी, और प्रेमिका के रूप में—बिना उन्हें पूरी तरह से एक पहचान में मिलाए। उनकी सोच मौलिक रूप से हाइब्रिड है, जो नारीत्व की अकेली परिभाषाओं का विरोध करती है। एक लेखिका के रूप में, वह कहानी कहने का अधिकार और आत्म-अभिव्यक्ति का दावा करती है; एक व्यवसायी के रूप में, वह लिंग-आधारित आर्थिक पदानुक्रम को चुनौती देती है; एक प्रेमिका के रूप में, वह भावनात्मक कमज़ोरी और असमान शक्ति संबंधों का सामना करती है। ये भूमिकाएँ अक्सर टकराती हैं, जो आधुनिक नारीत्व के मानसिक तनाव को दिखाती हैं, जहाँ पेशेवर सफलता भावनात्मक समानता की गारंटी नहीं देती। फिर भी, यह ठीक यही हाइब्रिडिटी है जो खैतान की नारीवादी आधुनिकता का निर्माण करती है: वह अपनी पहचान के एक पहलू को दूसरे के लिए कुर्बान करने से इनकार करती है, भले ही ऐसे इनकार से अकेलापन या सामाजिक अस्वीकृति मिले। इस परतदार चित्रण के माध्यम से, खैतान ग्लोबल आधुनिकता की एक सूक्ष्म नारीवादी आलोचना पेश करती हैं, यह दिखाते हुए कि आधुनिक महिला की सोच एक स्थिर अंतिम बिंदु नहीं है, बल्कि मोलभाव की एक चल रही प्रक्रिया है। उनका काम इस बात पर ज़ोर देता है कि समकालीन भारत में मुक्ति असमान है—जो वर्ग विशेषाधिकार, आर्थिक पहुँच, और सांस्कृतिक पूंजी से आकार लेती है—जबकि अलगाव अंतरंग और भावनात्मक क्षेत्रों में बना रहता है। इस प्रकार, 'अन्या से अनन्या' आधुनिक भारतीय महिला को प्रगति के विजयी प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि एक जटिल, विरोधाभासी व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है, जो उन संरचनाओं के भीतर आज़ादी का रास्ता खोज रही है जो केवल आंशिक रूप से बदली हैं।

8. इंटरसेक्शनैलिटी: जाति, वर्ग और लिंग

प्रभा खेतान की आत्मकथात्मक कहानी इंटरसेक्शनैलिटी को ज़ोरदार तरीके से सामने लाती है, यह दिखाते हुए कि कैसे जाति, वर्ग और लिंग पहचान के अलग-अलग हिस्सों के रूप में काम करने के बजाय महिलाओं की असल ज़िंदगी को आकार देने के लिए एक साथ काम करते हैं। एक मारवाड़ी, उच्च-जाति, आर्थिक रूप से संपन्न महिला के तौर पर, खेतान एक ऐसी स्थिति में हैं जो अक्सर सुरक्षा, सम्मान और शक्ति से जुड़ी होती है। फिर भी, 'अन्या से अनन्या' ऐसे विशेषाधिकार के मूल में विरोधाभास को उजागर करती है: जबकि वर्ग और जाति भौतिक पहुंच और सामाजिक स्थिति प्रदान करते हैं, वे साथ ही साथ गहन लैंगिक अनुशासन, नैतिक निगरानी और भावनात्मक संयम भी थोपते हैं। इस प्रकार खेतान की कहानी इस धारणा को चुनौती देती है कि विशेधिकार अपने आप स्वतंत्रता में बदल जाता है, इसके बजाय यह दिखाती है कि पितृसत्तात्मक नियंत्रण अक्सर कुलीन सामाजिक संरचनाओं के भीतर अधिक सूक्ष्म, आंतरिक और कठोर हो जाता है।

खेतान के काम की मुख्य बातों में से एक लैंगिक दमन के साथ वर्ग विशेषाधिकार के सह-अस्तित्व की उनकी पड़ताल है। कुलीन महिलाओं, विशेष रूप से व्यापार-उन्मुख मारवाड़ी परिवारों में, सम्मान, संयम और नैतिक पवित्रता का प्रतीक बनने की उम्मीद की जाती है, जो परिवार की प्रतिष्ठा के प्रतीकात्मक वाहक के रूप में काम करती हैं। खेतान बताती हैं कि यह उम्मीद लगातार सामाजिक निगरानी कैसे पैदा करती है - भाषण, गतिशीलता, यौनता और भावनात्मक अभिव्यक्ति पर - तब भी जब महिलाओं के पास शिक्षा और वित्तीय स्वतंत्रता होती है। उत्पीड़न के खुले रूपों के विपरीत, यह निगरानी सम्मान के मानदंडों, भावनात्मक पुलिसिंग और मौन अनुपालन के माध्यम से काम करती है। विशेषाधिकार के भीतर से अपनी बेचैनी, विद्रोह और भावनात्मक संघर्षों को बयान करके, खेतान यह उजागर करती हैं कि वर्ग की स्थिति पितृसत्तात्मक अपेक्षाओं को कैसे बढ़ा सकती है, न कि उन्हें खत्म कर सकती है, जिससे प्रतिरोध मनोवैज्ञानिक रूप से अधिक महंगा और सामाजिक रूप से जोखिम भरा हो जाता है।

इससे निकटता से जुड़ा हुआ है भौतिक सफलता के बावजूद भावनात्मक अधीनता पर खेतान की आलोचना, जो नवउदारवादी नारीवादी दावों को चुनौती देती है कि महिलाओं की मुक्ति के लिए आर्थिक सशक्तिकरण पर्याप्त है। हालांकि खेतान पेशेवर सफलता और वित्तीय स्वायत्तता हासिल करती हैं, उनकी कहानी बार-बार भावनात्मक निर्भरता, असमान रोमांटिक रिश्तों और भावनात्मक पारस्परिकता से इनकार पर लौटती है। यह विसंगति एक महत्वपूर्ण नारीवादी अंतर्दृष्टि को उजागर करती है: भौतिक स्वतंत्रता स्वचालित रूप से भावनात्मक पदानुक्रम को खत्म नहीं करती है। पितृसत्तात्मक संरचनाएं अंतरंग संबंधों में बनी रहती हैं, जहां महिलाओं के श्रम - देखभाल, वफादारी, भावनात्मक सहनशक्ति - को सामान्य और कम आंका जाता है। खेतान की आत्मकथात्मक ईमानदारी सशक्तिकरण के उन विचारों की सीमाओं को उजागर करती है जो प्रेम, विवाह और भावनात्मक वैधता को नियंत्रित करने वाले स्थापित लैंगिक मानदंडों को संबोधित किए बिना केवल आय, उद्यमिता या पेशेवर उपलब्धि पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

खैतान की लेखन शैली उच्च जाति की पाबंदियों और सम्मान की विचारधारा की तीखी आलोचना भी करती है, खासकर कुलीन परिवारों में महिलाओं को चुप कराने की। सम्मानित उच्च जाति की स्त्रीत्व की रचना आत्म-बलिदान, भावनात्मक सहनशक्ति और यौन अदृश्यता के माध्यम से की जाती है, जिससे इच्छा, असहमति या कमजोरी के लिए बहुत कम जगह बचती है। खैतान इस मॉडल को उन अनुभवों को बयान करके चुनौती देती हैं जिन्हें पारंपरिक रूप से "सम्मानित" महिलाओं की कहानियों से बाहर रखा जाता है - रोमांटिक लालसा, भावनात्मक निर्भरता, यौन जागरूकता और अस्तित्वगत अकेलापन। ऐसा करके, वह जाति-आधारित सम्मान की नैतिक अर्थव्यवस्था को बाधित करती है जो चुप्पी को एक गुण मानती है। उनका लिखने का कार्य ही एक उल्लंघनकारी इशारा बन जाता है, एक ऐसे सामाजिक माहौल में आवाज़ वापस पाना जहाँ उच्च जाति की महिलाओं से शांत, संयमित और अनसुनी रहने की उम्मीद की जाती है।

इस इंटरसेक्शनल लेंस के माध्यम से, अन्या से अनन्या नारीवादी विमर्श को जटिल बनाती है, यह ज़ोर देकर कि विशेषाधिकार उत्पीड़न को खत्म नहीं करता; यह उसके रूप को नया आकार देता है। खैतान का वर्णन दिखाता है कि जाति और वर्ग गहरी लैंगिक कमजोरी के साथ सह-अस्तित्व में रह सकते हैं, जिससे एक विशिष्ट रूप से सीमित व्यक्तिपरकता पैदा होती है जहाँ विद्रोह तंग सामाजिक सीमाओं के भीतर होना चाहिए। इन परतदार बाधाओं को उजागर करके, खैतान भारतीय नारीवादी लेखन में एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण का योगदान देती हैं - एक ऐसा दृष्टिकोण जो न केवल आर्थिक संरचनाओं में बल्कि सांस्कृतिक मानदंडों, भावनात्मक नैतिकता और स्त्रीत्व के जाति-आधारित आदर्शों में भी सामाजिक परिवर्तन का आह्वान करता है।

9. वैश्विक नारीवादी ग्रंथों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण

वर्जीनिया वूल्फ – ए रूम ऑफ़ वन'स ओन खैतान की कन्फेशनल शैली वर्जीनिया वूल्फ के इस तर्क से बहुत मिलती-जुलती है कि महिलाओं की रचनात्मक और बौद्धिक स्वतंत्रता भौतिक स्थितियों और मनोवैज्ञानिक स्वायत्तता से अविभाज्य है। वूल्फ ने मशहूर तौर पर कहा है कि फिक्शन लिखने के लिए एक महिला को "पैसे और अपना एक कमरा" चाहिए, जो आर्थिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत जगह को आत्म-अभिव्यक्ति के लिए ज़रूरी बताता है। इसी तरह, खैतान की लेखन शैली दिखाती है कि ऐसी जगहों की कमी या इनकार – चाहे वह सचमुच की हों या लाक्षणिक – महिलाओं की आवाज़ को कैसे सीमित करता है। उनके कबूलनामे सिर्फ़ व्यक्तिगत खुलासे नहीं हैं, बल्कि पितृसत्तात्मक, अक्सर कुलीन, सांस्कृतिक ढांचों के भीतर बौद्धिक क्षेत्र पर फिर से दावा करने के कार्य हैं। वूल्फ की तरह, खैतान भी दिखाती हैं कि महिलाओं के विचार सत्ता, परंपरा और लैंगिक अपेक्षाओं की विरासत में मिली संरचनाओं द्वारा कैसे आकार लेते हैं और सीमित होते हैं। इस तरह कन्फेशनल लहजा एक राजनीतिक रणनीति बन जाता है: आंतरिक संघर्षों, चुप्पी और भावनात्मक बातचीत को बयान करके, खैतान दिखाती हैं कि आत्म-पहचान के लिए संघर्ष सार्वजनिक रूप से प्रकट होने से पहले निजी क्षेत्र में शुरू होता है। दोनों लेखिकाओं में, व्यक्तिगत अनुभव को एक सार्वभौमिक नारीवादी अंतर्दृष्टि तक पहुँचाया गया है, जो इस बात पर ज़ोर देता है कि महिलाओं की मुक्ति के लिए संरचनात्मक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन दोनों की आवश्यकता है।

सिमोन डी बोउवार – द सेकंड सेक्स खैतान की कहानी सिमोन डी बोउवार की उस अवधारणा से भी मज़बूती से मेल खाती है जिसमें महिला को पुरुष-परिभाषित सामाजिक और बौद्धिक प्रणालियों के भीतर "अन्य" के रूप में देखा जाता है। डी बोउवार तर्क देती हैं कि स्त्रीत्व जन्मजात नहीं है, बल्कि सामाजिक कंडीशनिंग के माध्यम से निर्मित होता है, जहाँ महिलाओं को द्वितीयक, आश्रित और पुरुष पहचान से व्युत्पन्न के रूप में रखा जाता है। खैतान की कन्फेशनल शैली जीवित अनुभव के भीतर से इस प्रक्रिया को दर्शाती है, यह खुलासा करती है कि महिलाएं आज्ञाकारिता, बलिदान और आत्म-विनाश की अपेक्षाओं को कैसे आंतरिक बनाती हैं। उनके विचार डी बोउवार की इस अंतर्दृष्टि को प्रतिध्वनित करते हैं कि महिलाएं अक्सर खुद को पितृसत्तात्मक मानदंडों की नज़र से देखती हैं, जिसके परिणामस्वरूप अपराधबोध, आत्म-संदेह और खंडित पहचान होती है। हालाँकि, खैतान का लेखन निदान से आगे बढ़कर प्रतिरोध की ओर बढ़ता है: इन बाधाओं को खुले तौर पर नाम देकर, वह "अन्यत्व" की अनिवार्यता को चुनौती देती

हैं। डी बोउवार की तरह, वह मुक्ति के साधनों के रूप में एजेंसी, पसंद और चेतना पर ज़ोर देती हैं। इस प्रकार कन्फेशनल आवाज़ अस्तित्ववादी दावे के रूप में कार्य करती है – एक ऐसी दुनिया में व्यक्तिपरकता पर ज़ोर देना जिसने ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को स्वायत्त प्राणियों का दर्जा देने से इनकार किया है।

चिमामांडा न्गोज़ी एडिची – आत्म-पहचान और आधुनिकता की नारीवादी कहानियाँ खैतान का काम भी चिमामांडा न्गोज़ी एडिची की नारीवादी कहानियों से काफी मिलता-जुलता है, खासकर महिला आत्म-पहचान, शिक्षा और पोस्टकोलोनियल समाजों में आधुनिकता के तालमेल पर उनके साझा फोकस के कारण। एडिची की लेखन शैली अक्सर यह दिखाती है कि पढ़ी-लिखी महिलाएँ परंपरा, लैंगिक मानदंडों और वैश्विक आधुनिकता के साथ कैसे तालमेल बिठाती हैं, और अक्सर पितृसत्ता के सूक्ष्म और खुले रूपों का सामना करती हैं। इसी तरह, खैतान की स्वीकारोक्ति वाली शैली व्यक्तिगत आकांक्षा और सामाजिक रूप से तय भूमिकाओं के बीच तनाव को दर्शाती है, खासकर सांस्कृतिक रूढ़िवादिता और ऐतिहासिक असमानता से बने संदर्भों में। दोनों लेखिकाएँ शिक्षा को सिर्फ़ संस्थागत शिक्षा के रूप में नहीं, बल्कि जागरूकता बढ़ाने के साधन के रूप में देखती हैं – यह विरासत में मिली ऊँच-नीच पर सवाल उठाने का एक तरीका है। खैतान, एडिची की तरह, व्यक्तिगत महिला अनुभव को व्यापक सामाजिक-राजनीतिक ढाँचे में रखती हैं, यह दिखाते हुए कि व्यक्तिगत संघर्ष औपनिवेशिक विरासत, वर्ग विशेषाधिकार और लैंगिक शक्ति संबंधों से गहराई से जुड़े हुए हैं। उनकी कहानियाँ इस बात की पुष्टि करती हैं कि नारीवादी प्रतिरोध का मतलब ज़ोरदार या टकराव वाला होना ज़रूरी नहीं है; यह आत्मनिरीक्षण, कहानी कहने और अपने सच को व्यक्त करने के साहस से भी उभर सकता है। इस मायने में, खैतान की स्वीकारोक्ति वाली आवाज़ एक वैश्विक नारीवादी चर्चा में हिस्सा लेती है जो जीवन के अनुभवों को ज्ञान और बदलाव के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में महत्व देती है।

10. निष्कर्ष

प्रभा खेतान का काम बदलाव के समय में जेंडर पहचान की तरलता का एक शक्तिशाली प्रमाण है। अपनी आत्मकथात्मक और साहित्यिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से, वह परंपरा/आधुनिकता, पूर्व/पश्चिम, अधीनता/स्वतंत्रता के द्वंद्वों को चुनौती देती हैं। उनकी कथा शैली न केवल आत्म-अभिव्यक्ति के रूप में काम करती है, बल्कि उन सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाओं के खिलाफ नारीवादी प्रतिरोध के रूप में भी काम करती है जो महिलाओं की पहचान को सीमित करती हैं। वैश्वीकरण के युग में, उनकी आवाज़ जेंडर और आधुनिकता के जटिल क्षेत्र में आगे बढ़ रही महिलाओं की व्यक्तिगत अभिलेखागार और सामूहिक स्मृति दोनों के रूप में कार्य करती है।

11. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विश्वकर्मा, ए. (2024)। वैश्वीकरण के दौर में स्त्री पहचान का निर्माण: खेतान की अन्या से अन्या का नारीवादी पाठ। हिंदी साहित्य और समकालीन चर्चा, 16(1), 25-38।
2. जोशी, वी., और चितलांगिया, बी. (2024)। स्त्री आत्मकथा में प्रेम, पीड़ा और पहचान: अमृता पुतमान एवं प्रभा खेतान का तुलनात्मक अध्ययन। स्त्री अध्ययन पत्रिका, 11(2), 41-56।
3. सिंह, एस. (2023)। सम्मान की राजनीति और सामाजिक कलंक: प्रभा खेतान की आत्मकथा का विश्लेषण। समकालीन हिंदी चर्चा, 14(1), 63-77।
4. सिंह, आर., और तिवारी, आर. (2022)। स्त्री स्वतंत्रता और नैतिक दोगलापन: प्रभा खेतान की आत्मकथा के संदर्भ में। भारतीय साहित्य समीक्षा, 9(2), 84-98।
5. उपासना. (2020)। प्रभा खेतान के लेखन में नारीवादी अस्तित्ववाद और वर्ग अपना। नारी अपना, 8(1), 29-44.
6. दुबे, पी. (2019)। अस्मिता और आत्मसंघर्ष (अप्रकाशित डॉक्टरेट शोध प्रबंध) में हिंदी महिला आत्मकथाएँ।
7. रावत, वाई. (2018)। अन्या से अन्या: पितृसत्ता से पीड़ित स्त्री की साक्षी-वाणी. स्त्री विवेचन, 6(1), 52-66.
8. सागर, पी. (2015)। हिंदी साहित्य में स्त्री आत्मस्वीकार: प्रभा खेतान की आत्मकथा का अध्ययन। आलोचना, 19(3), 109-121.